रामायण एवं महाभारत में प्रतिबिम्बित विज्ञान

डॉ0 कामिनी
एस0आर0एस0एस0 उच्च विद्यालय,
शर्फुद्दीनपुर, मुजफ्फरपुर (बिहार)

भूमिका –

भारतीय विज्ञान की परम्परा विश्व की प्राचीनतम वैज्ञानिक परंपराओं में एक है। भारतीय विज्ञान का विकास प्राचीन समय में ही हो गया था।[1] अगर यह कहा जाए कि भारतीय विज्ञान की परंपरा दुनिया के प्राचीनतम परम्परा है, अतिशयोक्ति न होगी। जिस समय यूरोप घुमक्कड़ जातियाँ अभी अपनी बस्तियाँ बसाना सिख रही थी, उस समय भारत में सिन्धु घाटी के लोग सुनियोजित ढंग से नगर बसाकर रहने लगे थे। उस समय तक भवन निर्माण, धातु विज्ञान, वस्त्र निर्माण, परिवहन व्यवस्था आदि उन्नत दशा में विकसित हो चुके थे। भारत में गणित, ज्योतिष, रसायन, खगोल, चिकित्सा, धातु आदि क्षेत्रों में विज्ञान खुब उन्नति की। विज्ञान की यह परंपरा ईसा के जन्म से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व से शुरू होकर ईसा के जन्म के बाद लगभग 11वीं सदी तक काफी उन्नत अवस्था में थी। इस बीच आर्यभट्ट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, बोधायण, चरक से लेकर सवाई जय सिंह तक वैज्ञानिकों की एक लम्बी परंपरा विकसित हुई। प्राचीन भारतीय की यह उपलब्धियाँ आज के विज्ञान युग को भी चौकाने वाली है। विशेष रूप से आज के युवाओं को यह जानकर अपने प्राचीन इतिहास के विषय में निश्चित अभिमान जागृत होगा। इसलिए हर उपलब्धि के विषय में यहाँ प्रकाश डालने का प्रयास किया है।[2]

त्रेतायुग का प्रतिनिधित्व करने वाले रामायण ग्रंथ में पुत्रकामेष्टि यज्ञ का उल्लेख है। इस प्रसंग में यह एक विचित्र प्रकार का यज्ञ जान पड़ता है, जिसमें यज्ञ के द्वारा पुत्र की प्राप्ति सुलभ की गई हो। यह यज्ञ महर्षि शृंगि के प्रतिनिधित्व में संपन्न कराई गई थी। यह एक अनुसंधान का विषय है कि भारत में यज्ञों की पवित्र कर्म से पुत्रादि रत्नों की प्राप्ति सुलभ थी। वहीं महाभारत काल में भी महाराज पाण्डु से बिना संयोग किये महारानी कुन्ती को छह पुत्रों की प्राप्ति सुलभ हुई, जो कि महर्षि दुर्वासा के द्वारा प्रदान किये गये मन्त्रों से सुलभ हो सकी। आज के आधुनिक विज्ञान में वर्णित प्रतिध्वनि का उल्लेख रामायण और महाभारत के युद्धों में मिलता है जब महारथियों द्वारा जोर–जोर से अट्टहास किया जाता था। ध्वनि तरंग और भूंकप का उल्लेख राम–जानकी विवाह के शिवधनुष भंग की कथा में वर्णित है, कि जब श्रीराम द्वारा पवित्र शिव धनुष को भंग किया गया तो उससे भयंकर ध्वनि तरंगों और भूकंप का प्रादुर्भाव हुआ। इन तरंगों ने ही महर्षि परशुराम के ध्यान साधना को भंग किया था। इसी से मिलता–जुलता प्रसंग महाभारत काल में भी मिलता है, जब कंस के द्वारा आयोजित शिव धनुष यज्ञ को श्रीकृष्ण ने भंग कर दिया था। इक्ष्वाकु वंश शिरोमणि महाराजा भागीरथ द्वारा देवि गंगा को तपस्या से स्वर्ग से धरती पर लाना आदि तत्कालीन विज्ञान के फलस्वरूप ही संभव है। गंगा नदी को गौमुख से गंगासागर तक लाना उस समय के

तत्कालीन अभियंताओं की उच्च मेधाशक्ति को आज के आम जनमानस के सामने प्रस्तुत करती है। गंगासागर पर निर्मित डेल्टा आज भी शोध का विषय है। महाभारत में इसके संबंध में कहा गया है :–

यद्यकार्यशतं कृत्वा कृतं गंगाभिषेचनम्।

सर्व तत् तस्य गंगाम्भोः दहत्रूग्निरिवेन्द्यनम्।।

सर्पकृतयुगे पुण्यं त्रेतायां पुष्कर स्मृतम्।

द्वापरेऽपि कुरूक्षेत्रं गंगा कलियुगे स्मृता।।

पुनाति कीर्तिता पापं दृष्टा भद्रं प्रयच्छति।

अवगाढ़ा च पीता च पुनात्यासप्तमं कुलम्।।[3]

अर्थात् जैसे अग्नि ईंधन को जला देती है, उसी प्रकार सैकड़ों निषिद्ध कर्म करके भी यदि गंगा स्नान किया जाए, तो उसका जल उन सब पापों को भस्म कर देता है। सत्ययुग में सभी तीर्थि पुण्यदायक होते थे। त्रेता में पुष्कर और द्वापर में कुरूक्षेत्र तथा कलियुग में गंगा की सबसे अधिक महत्व बताया गया है। नाम लेने मात्र से गंगा पापी को पवित्र कर देती है, देखने से सौभाग्य तथा स्नान या जल ग्रहण करने से सात पीढ़ियों तक कुल पवित्र हो जाता है। गंगाजल पर किए शोध कार्यो से स्पष्ट है कि यह वर्षो तक रखने पर भी खराब नहीं होता। स्वास्थ्यवर्धक तत्वों का बाहुल्य होने के कारण गंगा जल अमृत के तुल्य, सर्व रोगनाशक, आयु बढ़ाने वाला तथा त्रिदोष नाशक होता है। इसमें पर्याप्त लवण जैसे कैलशियम, पोटेशियम, सोडियम आदि पाए जाते है और 45 प्रतिशत क्लोरिन होता है, जो जल में कीटाणुओं को पनपने से रोकता है। डॉ0 कोहिमान के मत के अनुसार जब किसी व्यक्ति की जीवनी शक्ति जवाब देने लगे, उस समय यदि उसे गंगाजल पिला दिया जाए, तो आश्यचर्यजनक ढंग से उसकी जीवनी शक्ति बढ़ती है और रोगी को ऐसा लगता है कि उसके भीतर किसी सात्विक आनंद का स्रोत फूट रहा है। शास्त्रों के अनुसार इसी वजह से अंतिम सयम में मृत्यु के निकट आए व्यक्ति के मुँह में गंगा जल डाला जाता है।[4]

ऊर्जा संरक्षण का नियम सबसे पहले लाग्राँज ने इसे सन् 1788 ई0 में व्यक्त किया। लाग्राँज के अनुसार ऐसे पिंडसमुदाय में जिस पर किसी बाहरी बल का प्रभाव न पड़ रहा हो, यांत्रिक ऊर्जा, अर्थात् स्थितिज ऊर्जा एवं गतिज ऊर्जा का योग, सर्वदा एक ही रहता है।[5] इस नियम का प्रयोग महर्षि ब्यास जी ने महारानी गांधारी को महाभारत के युद्धकाल में प्रदान किया था। महारानी गांधारी ने अपने पुत्र दुर्योधन का बलवान करने के लिए अपने नेत्रों में जमा उर्जा से किया था जो आज भी आम जनमानस के लिए आकर्षण का विषय है।

रामायण और महाभारत के विज्ञान की चर्चा भारत के पुरात्तन मंत्र विज्ञान के बिना संभव नहीं है। हमारे मंत्र विज्ञान का लोहा लोकतांत्रिक इंडिया देश के कई दिग्गज मान चुके है। मंत्रो को पहले के समय में ध्वनि विज्ञान को ध्यान में रखकर किया जाता था। उदाहरण स्वरूप में ''लं''[6] धरती का बीज मंत्र है जिससे धरती की उत्पत्ति ईश्वर ने की है; यदि नहीं ''ऐं''[7] से सरस्वती ''हीं''[8] से महालक्ष्मी आदि देवी–देवताओं का प्रादुर्भाव हुआ है। मंत्रों की शक्ति का प्रयोग रामायण में मेघदूत द्वारा किया गया था जहाँ मेघदूत ने अपने कुलदेवी (निकुंभला) के सामने रूद्रयामल तंत्र नामक गंथ से नवार्ण मंत्र ''ऊँ ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे''[9] का अनुष्ठान कर एक अभेध कवच की अभिलाषा की थी। वहीं श्रीराम ने लंका विजय के लिए इसी मंत्र का अनुष्ठान किया था, जिसे आज भारत में अकाल बोधन (शारदीय नवरात्र) के नाम से जानते हैं। वहीं महाभारत काल में मंत्रों के उच्चारण से देवशिल्पी विश्वकर्मा ने इंद्रप्रस्थ का निर्माण किया था। मंत्र जाप की महत्ता बताते हुए रामचरितमानस में कहा गया है–

मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा।

पंचम भजन सो बेद प्रकाशा।।[10]

अर्थात– मंत्र एक साधन है, जो मनुष्य की सोई हुई चेतना को सुषुप्त शक्तियों को सक्रिय कर देता है।

21वीं शताब्दी में आधुनिक विश्व को पहला टेस्ट ट्यूब बेबी मिला, लेकिन महाभारत काल में इससे मिलती जुलती तस्वीर मिलती है, जहाँ महारानी गांधारी ने अपने 100 पुत्रों को अल्प समय में प्राप्त किया था। आज का आधुनिक विज्ञान पूर्वजन्म की बात को मिथ्या मानता है या इस पर अनुसंधान की बात करता है, लेकिन महाभारत के वनपर्व में कहा गया हैः–

ऐहिकं प्राक्तनं वापि कर्म यद्चितं रूरत।

पौरूषोऽसौ परो यत्नो न कदाचन निष्फलः।।[11]

अर्थात्– पूर्वजन्म और इस जन्म के किए हुए कर्म, फल रूप में अवश्य प्रकट होते हैं। मनुष्य का किया हुआ यत्न, फल लाए बिना नहीं रहता है।

रामायण के अनुसार लंकापति रावण के पास कई विचित्र विमान थे। पुष्पक विमान के निर्माता विश्वकर्मा थे। कुछ विज्ञान के अनुसार इसे निर्माता पितामह ब्रह्मा जी थे। रावण सीताजी का हरण इसी विमान में किया था। रावण ने पुष्पक विमान अपने भाई कुबेर से छीन लिया था। रावण के मृत्यु के बाद विभिषण इसका अधिपति बना था। श्रीराम लंका विजय के बाद अयोध्या इसी विमान से पहुँचे थे। उल्लेखनीय है कि लंका में ऐसा विमानों की सुचारू रूप से व्यवस्था करने की जिम्मेवारी प्रहस्त को प्राप्त थी। श्रीलंका के श्रीरामयण रिसर्च कमेटी के अनुसार रावण के पास अपने पुष्यक विमान को रखने के लिए

चार हवाई अड्डे थे। इन चार हवाई अड्डे में से एक का नाम उसानगोड़ा था। इस हवाई अड्डे को हनुमान जी ने लंका दहन के समय जलाकर नष्ट कर दिया था। अन्य तीन हवाई अड्डे गुरूलोपोथा, तोतूपोलाकंदा और वारियापोला थे जो सुरक्षित बच गए। मेघनाद ने भी पुष्पक विमान का प्रयोग स्वर्ग विजय के दौरान किया था। स्वर्ग विजय के बाद इन्द्र को हराने के कारण मेघनाद को इंद्रजीत से संबोधित किया गया।

यह भी जनश्रुति है कि सूर्यदेव ने कर्ण को पुष्पक विमान दिया था। ऐसा कहते है कि महाभारत के युद्ध में कौरवों कि मित्रता दैत्यों से थी। दैत्यों ने उन्हें कुछ विमान दिए थे।

महाभारत से पूर्व हुई रामायण में नाव और जहाज होने का उल्लेख मिलता है। भगवान राम एक नाव में सफर करके ही गंगा पार करते है। पुष्पक विमान से वे श्रीलंका से अयोध्या लौटते हैं। दुसरी ओर संस्कृत और अन्य भाषाओं के ग्रंथों में इस बात की कई प्रमाण मिलते है कि भारतीय लोग समुद्र में जहाज द्वारा अरब और अन्य देशों की यात्रा करते थे। वहीं महाभारत में नौका विहार की कई कथाएँ एवं जनश्रुतियाँ प्रसिद्ध है।

रामायण में सीता द्वारा पिंडदान के वर्णन के क्रम में हा गया है कि राम, लक्ष्मण और सीता जब दशरथ का पिंडदान करने फल्गू नदी के तट पर पहुँचे, तो वे सीता को छोड़कर पिंड सामग्री जुटाने चले गए। इस बीच आकाशवाणी द्वारा सीता को पता चलता है कि शुभ मुहूर्त निकला जा रहा है, इसलिए सीता ही पिंडदान कर दे। आकाशवाणी का उल्लेख महाभारत में भी हुआ है, जब कंस देवकी और उसके पति वसुदेव को रथ पर बिठाकर ले जा रहा था। इन दोनों प्रसंग में आकाशवाणी होने की बात का पता चलता है; जो आधुनिक रेडियो, दूरभाष, दूरदर्शन के तकनीक की पुष्टि करता है।

महाभारत के युद्ध का आँखों देखा हाल महाराज धृतराष्ट्र को संजय द्वारा सुनाया जाना उस सयम की आधुनिक तकनीक को दर्शाता है, जो विज्ञान द्वारा ही संभव है। उदाहण के रूप में श्रीमद् भगवत्गीता के प्रथम अध्याय में धृतराष्ट्र पुछते हैः–

धर्मक्षेत्रे कुरूक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।

मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय।।[12]

अर्थात्– हे संजय! धर्मभूमि कुरूक्षेत्रमें एकत्रित, युद्ध की इच्छावाले मेरे और पाण्डुके पुत्रों ने क्या किया ?

संजय गीता के प्रथम अध्याय में धृतराष्ट्र से कहते हैं।

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा।

आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत्।।[13]

अर्थात् – उस समय राजा दर्योधनने व्यूहरचनायुक्त पाण्डवों की सेना को देखकर और द्रोणाचार्य के पास जाकर यह वचन कहा।

वहीं युद्ध के बाद संजय हर्षित होकर गीता के 18 वें अध्याय के 76 वें श्लोक में कहते हैः–

राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिमद्भुतम्।

केशवार्जुनयोः पुण्यं हश्यामि च मुहुर्मुहुः।।[14]

अर्थात् – हे राजन् ! भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन के इस एहस्ययुक्त, कल्याणकारक और अद्भूत संवादको पुनः पुनः स्मरण करके मैं बार–बार हर्षित हो रहा हूँ।

महाभारत में न्याय; शिक्षा, चिकित्सा, दान तथा पाशुपत का विशद निरूपण है। श्लोक संख्या 67 में कहा गया है :–

न्याय शिक्षाचिकित्सा च दानं पाशुपतं तथा।

हेतुनैव समं जन्म दिव्यमानुषसंज्ञितम्।।[15]

रामायण एवं महाभारत दोनों ही ग्रंथों के आधार पर कई साहित्यिक रचनाएँ की गई हैं। इनकी कथावस्तु से प्रेरित होकर विषय गहण किया गया है। इसके कई उदाहरण हमारे समक्ष हैं जैसे–रामचरितमानस, भ्रमरगीत, अभिज्ञान शकुंतलम्, भगवद्गीता, राम की शक्ति पूजा, साकेत, उर्मिला, पंचवटी, आनंद रामायण, जनमेंजय का नागयज्ञ, महाभारत, संक्षिप्त रामायण, द्रौपदी नल–दमयन्ति कथा आदि।

इस प्रकार हम देखते हैं कि रामायण एवं महाभारत में विज्ञान से संबंधित पर्याप्त तथ्य मौजूद हैं, जिन पर यदि शोधकार्य किया जाए एवं विज्ञान से नई तकनीक विकसित की जाए, तो हम आधुनिक वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग के सबसे समर्थ देशों की श्रेणी में गिने जाएँगें। आज के वैज्ञानिक युग की सबसे बड़ी कमी है स्वार्थपरता की भावना; हिंसा एवं बिखरते मानवीय मूल्य हैं। इन समस्याओं पर भी अंकुश रामायण एवं महाभारत ग्रंथ के अध्ययन एवं अध्यापन से लगाया जा सकता है। महाभारत ग्रंथ, रामायण के उपरांत लिखा गया है, अतः इसमें रामायण की कथावस्तु का भी समावेश किया गया है।

आज हम जितना प्रयास विदेशों में तैयार तकनीक को सीखने और समझने में लगाते हैं, उसका एक चौथाई अंश, अपने देश में मौजूद विज्ञान के आधार पर नवीन तकनीकों के निर्माण में लगाएँ, तो हमारा देश विश्व के अन्य देशों की तुलना में सबसे समृद्ध एवं उन्नत देश कहलाएगा। अतः हमारी नई पीढ़ी को

इन ग्रंथों में उपलब्ध विज्ञान को जानने, समझने एवं उसका प्रयोग नवीन तकनीकों हेतु करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करना होगा। इसके लिए इन ग्रंथों को पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाना होगा; तभी हम इन ग्रंथों में उपलब्ध विज्ञान को समुचित रूप से जान सकते हैं और इसका भरपूर उपयोग कर सकते है। अपने देश के ज्ञान–विज्ञान का उपयोग करके ही भारत फिर से विश्व गुरू बन सकता है।

संदर्भ सूची :–

1. hi.wikipedia.org/wiki/विज्ञान
2. www.hindujagruti.org.
3. महाभारत, वनपर्व 85 / 89–90–93
4. डॉ0 प्रकाशचन्द्र गंगाराड़े, हिन्दुओं के रीति–रिवाज तथा मान्यताएं, प्रकाशक–पुस्तक महल, पुनर्मुद्रित संस्करण, दिसम्बर 2005, ISBN : 81-223-0836-8, पृष्ठ सं0–22
5. उर्जा संरक्षण का नियम / wikipedia.
6. सिद्ध कुंजिका स्रोत, रूद्रयामल तंत्र गंथ
7. सिद्ध कुंजिका स्रोत, रूद्रयामल तंत्र गंथ
8. सिद्ध कुंजिका स्रोत, रूद्रयामल तंत्र गंथ
9. सिद्ध कुंजिका स्रोत, रूद्रयामल तंत्र गंथ
10. तुलसीदास, रामचरितमानस, अरण्यकांड, 35 / 1
11. महाभारत, योगवशिष्ठ, 3 / 95 / 34.
12. श्रीमद् भगवत्गीता–श्लोक संख्या 1, अध्याय संख्या–1
13. श्रीमद् भगवत्गीता–श्लोक संख्या 2, अध्याय संख्या–1
14. श्रीमद् भगवत्गीता–श्लोक संख्या 76, अध्याय संख्या–18
15. महाभारत, श्लोक संख्या–64, पृ0 सं0–6